आधुनिक भीमगीतोंके बदलते स्वरुप

डॉ. अनया थत्ते

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

यूजीसी – आईयूसी सहअध्येता

मार्च २०२५

सारांश

महाराष्ट्र की दलित संस्कृति की धरोहर भीमगीत केवल महाराष्ट्र में ही नहीं अपितु, संपूर्ण विश्वभर में दलित संस्कृति की विशेष पहचान बन चुका है। आधुनिक युग में इन गीतोंद्वारा दलितोंके सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान के बारेमे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी द्वारा किये गए प्रयासों के वर्णन मिलते है। समय के साथ इन गीतोंके स्वरुप, प्रस्तुति, विषयवस्तु, प्रचार तथा प्रसार सभी में परिवर्तन दिखाई देते है, जो निश्चित ही सकारात्मक है। प्रस्तुत शोधपत्र में भीम गीतों के उद्द्येश तथा आधुनिक स्वरुप पर विशेष अभ्यास किया गया है।

कुछ महत्वपूर्ण शब्द

संगीत , बहुजन समाज, भीमगीत, आंबेडकरी जलसा, अभिजात संगीत, व्यावयायिक संगीत

विषयप्रवेश

भीमगीत महाराष्ट्र में लोक कविता और गीतों की एक शैली है, जो बाबासाहेब अंबेडकरजी जैसे महान शख्सियत का जश्न मनाती है, जिन्हें भीमराव अंबेडकर के नाम से भी जाना जाता है। यह गीत महाराष्ट्र में दलित सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं और अक्सर सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के विषयों पर प्रकाश डालते हैं।

भीमगीत शब्द की उत्पत्ति भीमराव और गीत शब्दोंसे हुई है। नाम से ही पता चलता है की यह गीत भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी से सम्बंधित है। यह गीत न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में, बल्कि जाति–आधारित भेदभाव और उत्पीड़न के खिलाफ प्रतिरोध के साधन के रूप में भी काम करते हैं।भीमगीत में, भीमराव अंबेडकरजी को अक्सर हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए अथवा बहुजन समाज के लिए शक्ति, साहस और आशा के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। इन गीतों के विषय अधिकतर दलितों के उत्थान में उनके योगदान की प्रशंसा करते हैं और सामाजिक सुधार और समानता की वकालत करते हैं।

भीमगीत ने महाराष्ट्र में दलितों की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह उनकी सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग बना हुआ है। अपने शक्तिशाली गीतों और धुनों के माध्यम से, भीमगीत सामाजिक न्याय और समानता के लिए चल रहे संघर्ष की याद दिलाता है।

भीमगीतों के कुछ प्रमुख दलित कवि

भीमगीत, भारत की समृद्ध लोक संगीत परंपरा का हिस्सा होने के नाते, सदियों से कई प्रतिभाशाली कवियों द्वारा तैयार किए गए है। हालाँकि इन परंपराओं की मौखिक प्रकृति के कारण विशिष्ट श्रेय चुनौतीपूर्ण हो सकता है, भीम गीत परंपरा में योगदान देने वाले कुछ प्रसिद्ध कवियों में शामिल हैं –

1. **शाहीर अण्णभाऊ साठे–** एक प्रमुख मराठी कवि, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता, अण्णभाऊ साठे की कृतियाँ अक्सर उत्पीड़ित और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के संघर्षों को दर्शाती हैं। उनकी रचनाओं का भीमगीत संग्रह पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

2. **कवि नामदेव ढसाळ** – मराठी साहित्य और दलित पैंथर आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति, नामदेव ढसाळ की कविता अपने कच्चेपन, जुनून और सामाजिक वास्तविकताओं के अप्राप्य चित्रण से चिन्हित है। उनकी कविताओंने पीढ़ियों को प्रेरित किया है और उन्हें भीम गीत संग्रह में शामिल किया गया है, जिससे हाशिये पर पड़े लोगों की आवाज को बुलंद किया गया है।

हालाँकि इन कवियों ने भीम गीत परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि भीम गीत अनगिनत अनाम कवियों के सामूहिक योगदान के माध्यम से विकसित हुआ है, जिनमें से प्रत्येक ने इस जीवंत सांस्कृतिक विरासत में अपनी अनूठी आवाज जोड़ी है।

3. वामनदादा कर्डक, जिन्हें भीमगीत कवी के रूप में जाना जाता है, महाराष्ट्र के दलित साहित्य और आंबेडकरी आंदोलन के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। उनका जन्म 15 अगस्त 1922 को नाशिक जिले के सिन्नर तालुका के देशवंडी गांव में हुआ था। वामनदादा ने अपने जीवन में सामाजिक न्याय, समानता और बौद्ध धर्म के विचारों को अपने गीतों और कविताओं के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया। उन्होंने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों को अपनी ओजस्वी वाणी और सशक्त लेखन के माध्यम से प्रचारित किया। वामनदादा ने 10,000 से अधिक भीमगीतों की रचना की, जो दलित समाज के संघर्ष और आत्मसम्मान की भावना को जागृत करने का माध्यम बने। उनके गीतों में न केवल आंबेडकर के विचारों की गूंज थी, बल्कि समाज में व्याप्त अन्याय और भेदभाव के खिलाफ एक सशक्त आवाज भी थी। उनकी रचनाएँ आज भी आंबेडकरी आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

भीमगीत के विभिन्न पारंपारिक रूप

भीमगीत, बाबासाहेब अम्बेडकर के जीवन, शिक्षा और आदर्शों का जश्न मनाने के लिए समर्पित लोक कविता और गीतों की एक शैली है, जो महाराष्ट्र और उसके बाहर विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और क्षेत्रीय विविधताओं को दर्शाती है। यहां भीमगीत के कुछ सामान्य रूप दिए गए हैं–

1. **पारंपरिक लोक गीत–** पारंपरिक भीमगीत अक्सर लोक गीतों का रूप लेते हैं, जिनमें सरल धुनें और दोहराव वाले स्वर होते हैं। यह गीत आम तौर पर दलित समुदायों के भीतर सामाजिक समारोहों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और धार्मिक समारोहों के दौरान गाए जाते हैं।

2. गाथागीत और कथात्मक कविताएँ– कुछ भीमगीत गाथागीत या कथात्मक कविताओं के रूप में संरचित हैं, जो बाबासाहेब अम्बेडकरजी के जीवन और संघर्षों के साथ–साथ दलित आंदोलन के अन्य प्रमुख व्यक्तियों का वर्णन करते हैं। ये रचनाएँ अधिकतर अम्बेडकरजी के जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों और सामाजिक क्षेत्र में उनके योगदान को उजागर करती हैं। इन गीतों में अम्बेडकरजी के जीवन के महत्वपूर्ण पल, उनकी संघर्षों, सफलताओं और उनके नेतृत्व के महत्वपूर्ण पहलु उनके द्वारा पुरस्कृत स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, प्रज्ञा शील तथा करूणा के संदेशोंका वर्णन होता है।

3. विरोध गीत– भीमगीत विरोध गीत के रूप में भी काम करता है जो दलितों की शिकायतों और आकांक्षाओं को व्यक्त करता है, जाति–आधारित भेदभाव को चुनौती देता है और सामाजिक कुरितीयोंपर आघात करता है। इन गीतों की विशेषता दलितोंके हक की मांग, सशक्तिकरण और समानता का आह्वान है।

4. भक्ति गीत– बाबासाहेब अम्बेडकर का जश्न मनाने के अलावा, भीमगीत में कभी–कभी भक्ति तत्व शामिल होते हैं, जो दलित समुदायों के भीतर एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में अम्बेडकरजी के प्रति श्रद्धा और भक्ति व्यक्त करते हैं। ये भक्ति गीत भजन या धार्मिक भजनों के साथ समानता बना सकते हैं। इनके विषय प्रायः डॉ. आंबेडकरजी द्वारा पुरस्कृत

5. क्रांतिकारी गीत– कुछ भीमगीत अधिक क्रांतिकारी स्वर में होते हैं, उत्पीड़न के खिलाफ प्रतिरोध का आह्वान करते हैं और समुदायों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए संगठित करते हैं। ये गीत अक्सर दलित श्रोताओं के बीच एकजुटता और सशक्तिकरण की भावना पैदा करते हैं।

6. अम्बेडकरी जलसा – अम्बेडकरी जलसा अभिव्यक्ति का एक सांस्कृतिक और कलात्मक रूप है जिसकी उत्पत्ति महाराष्ट्र में हुई थी। यह लोक गीतों और प्रदर्शनों की एक परंपरा है जो डॉ. बी. आर. अम्बेडकरजी की शिक्षाओं और दर्शन का जश्न मनाती है। अम्बेडकर, एक प्रमुख समाज सुधारक और भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार थे। ये प्रदर्शन दलित आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और डॉ. अंबेडकरजी के समानता, सामाजिक न्याय और जाति उन्मूलन के संदेश को फैलाने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जलसा परंपरा दलित राजनीतिक विमर्श में पहचान, स्वाभिमान और सत्ता संघर्ष की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए लोक गीतों का उपयोग करती है। यह संगीत के माध्यम से समानता की लड़ाई को उजागर करने के माध्यम के रूप में कार्य करता है, केवल मनोरंजन ही नहीं, परंतु

इससे भी अधिक परिणाम प्राप्त करने हेतु गीतों का उपयोग करता है। इन गीतों का आकर्षण इस तथ्य से है कि ये दलित समुदाय के अनुभवों और संघर्षों पर आधारित हैं।

अंबेडकरी जलसा परंपरा के एक प्रमुख व्यक्ति भीमराव कर्डक ने इस कला का उपयोग लोगों के बीच डॉ. अंबेडकरजी की आवाज को बढ़ाने के लिए किया, खासकर उन लोगों के बीच, जो अशिक्षित थे और पढ़ या लिख नहीं सकते थे। जलसा के माध्यम से, सामाजिक सुधार और जातिगत भेदभाव के खिलाफ लड़ाई का संदेश, ऐसी भाषा और रूप में फैलाया गया जो जनता के लिए सुलभ और आकर्षक हो।

अंबेडकरी जलसा जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक शक्ति रही है और इसने भारत में जाति–विरोधी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

7. महिला गीत– भीमगीतोंका विकास दलित बस्तियोंमें मौखिक परंपरा से हुआ। इन बस्तीयोंमें बचपन से ही बच्चोंपर भीमगीतोंके संस्कार होते है। घर का काम करते हुए यहांकी महिलाऐं ओवी, पालना (झूला) गाती है, जो बाबासाहब के जीवनकार्य पर आधारित होते है। कभी कभी बस्ती के बुद्ध विहार में होनेवाले कार्यक्रमोंमें भी महिलाओंद्वारा भीमगीत की प्रस्तुति होती है।

भीमगीतों का महत्व

अम्बेडकरी गीत, जिन्हें अक्सर भीमगीत भी कहा जाता है, समाज के विभिन्न पहलुओं में महत्व रखते हैं, विशेष रूप से दलित समुदाय और सामाजिक सक्रियता के व्यापक क्षेत्र में। इन गीतों के महत्वपूर्ण होने के प्रमुख कारण इसप्रकार है –

1. सांस्कृतिक पहचान– अम्बेडकर गीत दलित समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और उसका जश्न मनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे पीढ़ी–दर–पीढ़ी कहानियों तथा बाबासाहब अम्बेडकरजी द्वारा बताये गए मूल्योंको आगे बढ़ाने और दलितों के बीच आत्मसम्मान की भावना को बढ़ावा देने के साधन के रूप में काम करते हैं।

2. ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण– कई अम्बेडकर गीत बाबासाहेब अम्बेडकर और दलित आंदोलन के अन्य प्रमुख व्यक्तियों के जीवन, शिक्षा और संघर्षों का दस्तावेजीकरण करते हैं। वे ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक आंदोलनों और जाति–आधारित भेदभाव के खिलाफ चल रही लड़ाई में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

3. शिक्षा और जागरूकता– अम्बेडकर गीत शैक्षिक उपकरण के रूप में काम करते हैं जो सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकार के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं। अपने गीतों और संदेशों के माध्यम से, ये गीत श्रोताओं को बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा अपनाए गए सिद्धांतों और मूल्यों के बारे में शिक्षित करते हैं ।दलित समुदायोंमें परिवर्तन लाने हेतु यह गीत प्रेरणा देते है।

4. सशक्तिकरण और प्रेरणा– भीमगीत व्यक्तियों, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लोगों को अपने अधिकारों का दावा करने और दमनकारी प्रणालियों को चुनौती देने के लिए

प्रेरित और सशक्त बनाते हैं। गीत अक्सर साहस, लचीलापन और एकता की भावनाएं पैदा करते हैं, श्रोताओं को अन्याय और भेदभाव के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित करते हैं।

5. सामाजिक लामबंदी– भीमगीत सामाजिक और राजनीतिक कार्रवाई के लिए समुदायों को संगठित करने में सहायक रहे हैं। इन्हें अक्सर विरोध प्रदर्शनों, रैलियों और सक्रियता के अन्य रूपों के दौरान रैली के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, लोगों को सामान्य मुद्दों पर एकजुट किया जाता है और उन्हें सामूहिक कार्रवाई के लिए प्रेरित किया जाता है।

6. सांस्कृतिक प्रतिरोध– सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में अपनी भूमिका के अलावा, भीमगीत जाति–आधारित भेदभाव और उत्पीड़न के खिलाफ सांस्कृतिक प्रतिरोध के रूप में भी काम करते हैं। वे हाशिए की आवाजों को सुनने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं, प्रमुख आख्यानों को चुनौती देते हैं और सामाजिक परिवर्तन की वकालत करते हैं।

कुल मिलाकर, अम्बेडकर गीत अत्यधिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व रखते हैं, जो दलित समुदाय के भीतर और उससे परे शिक्षा, सशक्तिकरण और उपदेश के रूप में काम करते हैं। वे लचीलेपन और सक्रियता की भावना का प्रतीक हैं।

आधुनिक युग में भीमगीतोंमें आए बदलावोके कारण

आधुनिक युग में, अम्बेडकर गीत समाज के विभिन्न क्षेत्रों में, समसामयिक संदर्भों को अपनाते हुए और समसामयिक मुद्दों को संबोधित करते हुए, महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

1. आंतरसांस्कृतिक आदानप्रदान

भिमगीतों में अंतरसांस्कृतिक आदान–प्रदान एक अनोखी विशेषता है, जो इन गीतों की व्यापकता और विविधता को दर्शाता है। ये गीत न केवल दलित समुदाय की पीड़ा, संघर्ष और आत्मसम्मान को उजागर करते हैं, बल्कि अन्य संस्कृतियों से भी प्रेरणा लेते हैं। विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के संगीत और शैली के साथ भिमगीतों का संगम, इन्हें और भी प्रभावशाली बनाता है।

अंतरसांस्कृतिक आदान–प्रदान के कारण भिमगीतों में संगीत, लय और धुनों की विविधता देखने को मिलती है। इसके साथ ही, इन गीतों के संदेश भी सार्वभौमिक हो जाते हैं, जो न्याय, समानता और सामाजिक जागरूकता की भावना को हर समुदाय तक पहुँचाते हैं। भिमगीतों के इस पहलू ने इन्हें एक सशक्त सांस्कृतिक माध्यम बना दिया है।

2. प्रौद्योगिकी में विकास

तकनीक ने संगीत की दुनिया में क्रांति ला दी है। डिजिटल उपकरणों और सॉफ्टवेयर की मदद से संगीत निर्माण, रिकॉर्डिंग और संपादन आसान और सुलभ हो गया है। ऑनलाइन स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म, जैसे यूट्यूब, फेसबुक, और इंस्टाग्राम के जरिए संगीत को दुनिया भर में

पहुँचाया जा सकता है, जिससे कलाकारों को व्यापक दर्शकों तक पहुँचने का मौका मिलता है। वहीं, ऑटो–ट्यून और एआई जैसी तकनीकों ने संगीत के स्वरूप और शैली में नए आयाम जोड़े हैं। भीमगीत, जो बाबासाहेब अंबेडकर और दलित आंदोलन की विचारधारा से प्रेरित हैं, अब दलित समुदाय से बाहर भी अपनी जगह बना रहे हैं। मुंबई को इस सांस्कृतिक परिवर्तन का केंद्र माना जा सकता है, जहां भीमगीत अब मुख्यधारा के मंचों पर प्रस्तुत किए जा रहे हैं। डिजिटल रिकॉर्डिंग और संपादन उपकरणों के आगमन से भिमगीतों का निर्माण आसान और सटीक हो गया है। ने इन्हें व्यापक दर्शकों तक पहुँचाया है। अब ये गीत न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में सुने जाते हैं। स्ट्रीमिंग सेवाओं और सोशल मीडिया ने इन्हें नई पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाया है और इनके सामाजिक संदेश को अधिक प्रभावी तरीके से प्रसारित किया है। इन गीतों का डिजिटल संग्रह, संरक्षण और व्यापक प्रचार इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रौद्योगिकी ने भिमगीतों को एक नया जीवन दिया है और इन्हें सामाजिक न्याय और समानता की लड़ाई में और भी प्रभावशाली बना दिया है।

3. प्रसारमाध्यमोंकी उपलब्धि

प्रसारमाध्यमों के विकास ने भिमगीतों पर गहरा प्रभाव डाला है। प्राचीन समय में भिमगीत मौखिक परंपरा के माध्यम से सीमित समुदायों तक पहुँचते थे। लेकिन आधुनिक प्रसारमाध्यमों, जैसे रेडियो, टेलीविजन, और विशेष रूप से सोशल मीडिया के उदय के साथ, इन गीतों का प्रसार व्यापक हो गया है।

प्रसारमाध्यमों ने भिमगीतों को वैश्विक मंच दिया, जिससे इनके सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश व्यापक स्तर पर पहुँच सके। प्रसारमाध्यमों के जरिए भिमगीत नए श्रोताओं तक पहुँचने और अपनी पहचान बनाए रखने में सफल रहे हैं।

4. **वैश्विकरण**

अंबेडकरजी के गीतों ने भौगोलिक सीमाओं को पार कर अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है, जिससे दुनिया भर में सामाजिक न्याय आंदोलनों और आंबेडकर जी की विचारधारा को वैश्विक स्तर पर साझा करना संभव हुआ। समानता, गरिमा और मानव अधिकारों के उनके सार्वभौमिक संदेश विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ गूंजते हैं, एकजुटता और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। इसप्रकार समकालीन संगीत शैलियों, तकनीकी प्रगति और सामाजिक न्याय आंदोलनों को अपनाते हुए, अंबेडकरजी गीत आधुनिक युग में विकसित हो रहे हैं।

5. **व्यावसायीकरण**

व्यावसायीकरण के साथ, भीमगीतोंका उपयोजन अलग अलग गतिविधीयोंमें होने लगा है। भीमगीतोंमें अब उद्देश्शोंकी पूर्ती के साथ ही मनोरंजन को प्राथमिकता दी जाती है।

जबकि व्यावसायीकरण ने भीमगीत की पहुँच बढ़ा दी है, जिससे वे अपने पारंपरिक दर्शकों के बाहर के लोगों के लिए अधिक सुलभ हो गए हैं, इसने कभी–कभी इन गीतों के मूल उद्देश्य और भावनात्मक गहराई को कम कर दिया है। लाभ और जन अपील पर ध्यान केंद्रित करने से, कुछ मामलों में, उनके गहन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को कम कर दिया है। इसके बावजूद, भीमगीत पहचान, प्रतिरोध और आशा व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बना हुआ है।

संगीत के व्यापारीकरण के कारण यह गाने व्यावसायिक रिकॉर्डिंग और लाइव परफॉर्मेंस का अहम् हिस्सा बन गए हैं। संगीत क्षेत्र में मुख्यधारा में कार्यरत लगभग सभी प्रमुख हस्तियां और सेलिब्रिटी गायक भी इन गीतों को गाकर और उनका प्रचार–प्रसार कर उन्हें बड़े समुदायों तक पहुंचा रहे हैं। यह स्वीकृति सामाजिक बदलाव और भीमगीतों की संदेशवाहक शक्ति को दर्शाती है। हालांकि, कुछ लोग इनकी व्यावसायिकता पर सवाल उठाते हैं, क्योंकि इससे इनके मूल उद्देश्यों पर प्रभाव पड़ सकता है।

पुराने और आधुनिक भीमगीतों के बीच शैलीगत अंतर

भीमगीतोंके स्वरुप में समय के साथ महत्वपूर्ण शैलीगत परिवर्तन हुए हैं, जो सामाजिक चेतना, संगीत संबंधी प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक संदर्भों में बदलाव को दर्शाते हैं। पुराने और आधुनिक अम्डकर गीतों के बीच कुछ प्रमुख अंतर इसप्रकार है। –

गीत और भाषा –

पुराने अम्बेडकर गीतों में अक्सर सरल भाषा और सीधे बोलों का उपयोग किया जाता था, जो मुख्य रूप से डॉ. अम्बेडकरजी की उपलब्धियों की प्रशंसा, सामाजिक न्याय की वकालत और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने पर केंद्रित थे।

आधुनिक अम्बेडकर गीतों में अधिक जटिल भाषा, काव्यात्मक उपकरण और समसामयिक संदर्भ शामिल हो सकते हैं, जो डॉ. अम्बेडकर की विरासत से परे जातिगत भेदभाव, आर्थिक असमानता और राजनीतिक सशक्तिकरण जैसे सामाजिक मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करते हैं।

सांगीतिक उपयोजन–

पारंपरिक भीमगीत अक्सर विशिष्ट क्षेत्रों या समुदायों में प्रचलित लोक संगीत परंपराओं से प्रभावित होते थे, जिनमें सरल धुनें, दोहराए जाने वाले कोरस और ढोलक, हारमोनियम और तंबूरी जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्र शामिल होते थे।

आधुनिक भीमगीत हिप–हॉप, रैप, रॉक और इलेक्ट्रॉनिक संगीत सहित विविध संगीत शैलियों से प्रेरणा ले रहें हैं, जिसमें युवा दर्शकों को आकर्षित करने के लिए नवीन उत्पादन तकनीकों, शहरी बीट्स और पारंपरिक और आधुनिक वाद्ययंत्रों के मिश्रण का उपयोग किया जाता है।

विषय–वस्तु और सामग्री–

पुराने भीमगीतों में मुख्य रूप से डॉ. अम्बेडकर के जीवन, शिक्षाओं और सामाजिक सुधार में योगदान का जश्न मनाया जाता है, जिसमें दलित समाज के संदर्भ में लिए समानता, गरिमा और सशक्तिकरण के विषयों पर जोर दिया जाता है।

आधुनिक अम्बेडकर गीत दलित समुदायों से संबंधित सामाजिक मुद्दों को व्यापक रूप से संबोधित कर सकते हैं, जिसमें जाति–आधारित हिंसा, भेदभाव, भूमि अधिकार, शिक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व शामिल हैं, जो समकालीन संघर्षों और आकांक्षाओं को दर्शाते हैं।

प्रदर्शन संदर्भ–

पारंपरिक भीमगीत अक्सर दलित कार्यकर्ताओं और समाज सुधारकों द्वारा आयोजित सामुदायिक समारोहों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों या राजनीतिक रैलियों में प्रस्तुत किए जाते थे, जो प्रतिरोध और एकता के गीत के रूप में काम करते थे।

आधुनिक भीमगीतों को सोशल मीडिया, स्ट्रीमिंग सेवाओं और डिजिटल चॅनलों सहित विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है, जो व्यापक दर्शकों तक पहुंच सकते हैं और भौगोलिक सीमाओको भीं पार करते हैं। भीमगीतोंकी प्रस्तुति की ओर अधिक ध्यान दिए जाने के कारण उनमें अधिक सौंदर्यात्मक पहेलूओंका समावेश किया जाता है। आज अलग अलग टी.वी. चॅनल पर प्रस्तुत होनेवाले रियालिटी शो में भी भीमगीतोंका समावेश बुध्दपौर्णिमा, आंबेडकर जयंती, महापरिनिर्वाण दिन आदि अवसरोंपर हो रहा है, जिनका प्रसारण संपूर्ण विश्व में हो रहा है।

कथात्मक परिप्रेक्ष्य –

पुराने भीमगीतों में आमतौर पर डॉ. अम्बेडकर को एक वीर व्यक्ति और दूरदर्शी नेता के रूप में चित्रित किया जाता है, जो दलित समुदायों को सामाजिक उत्पीड़न और भेदभाव से मुक्त कराने में उनकी भूमिका के लिए श्रद्धा और प्रशंसा का आह्वान करते हैं।

आधुनिक अम्बेडकर गीत अधिक आलोचनात्मक और सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य अपना रहें हैं, डॉ. अम्बेडकर के योगदान को स्वीकार करते हुए समकालीन समाज में मौजूद प्रणालीगत अन्याय, जातिगत पदानुक्रम और संस्थागत भेदभाव पर भी सवाल उठाते हैं।

जहां पुराने भीमगीतोंने दलितोंपर होनेवाले अन्याय को संगीत के माध्यम से प्रकट किया, वहीं आधुनिक भीमगीत समकालीन भारत में सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए चल रहे संघर्ष को दर्शाते हैं। डॉ. आंबेडकर के कारण दलित समाज को प्राप्त हुए अधिकारों का वर्णन भी किया गया है।

आधुनिक भीमगीतोंका स्वरूप

समसामयिक संगीत शैलियाँ– संगीत उत्पादन के आधुनिकीकरण और लोकप्रिय संस्कृति के प्रभाव के साथ, समसामयिक भीमगीतों में हिप–हॉप, रैप और इलेक्ट्रॉनिक संगीत सहित विभिन्न संगीत शैलियों के तत्व शामिल हो रहे हैं। पारंपरिक और आधुनिक तकनीक के प्रभाव का यह मिश्रण व्यापक स्तर तक पहुँचने में सहाय्यक होता करता है। दर्शकों और युवा पीढ़ी के साथ प्रतिध्वनित भीमगीत के ये विभिन्न रूप दलित सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की समृद्धि और विविधता को दर्शाते हैं और महाराष्ट्र और उसके बाहर सामाजिक लामबंदी, सांस्कृतिक संरक्षण और राजनीतिक सक्रियता के लिए महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में काम करते हैं।

आज हमें जो भीमगीत प्राप्त होते हैं, वह गजल, कव्वाली, भावगीत, नाटयसंगीत आदि सभी गीतप्रकारोंकी शैलियोंके आधारपर बने हुए दिखाई देते है। इनमेंसे कुछ उल्लेखनीय प्रकार–

रैपटोली – रैपटोली रूप में भीमगीत पारंपरिक भीमगीत शैली को रैप संगीत के तत्वों के साथ मिश्रित करता है, जिसके परिणामस्वरूप प्राप्त रचना में दोनों शैलियों के वैशिष्ट्योंको सम्मिलित किया जाता है। ऐसे गीत लयप्रधान होने के कारन तुरंत ही श्रोताओंके मन को आकर्षित करते है। रैपटोली के माध्यम से डॉ. भीमराव आंबेडकरजी द्वारा किया उद्‌बोधन छोटे बड़े सभी दर्शक तथा श्रोताओं तक पहुंचता है।

लावणी– लावणी महाराष्ट्र का एक अत्यंत लोकप्रिय लोकसंगीत प्रकार है। गाँवखेड़ोंमें मनोरंजन हेतु इस गीतप्रकार को प्रस्तुत किया जाता है। इसे लोकप्रिय गीतप्रकार के माध्यम द्वारा भीमगीतोंको भी समाज के हर घटक तक पहुँचाने का प्रयास हो रहा है। लावणी होते हुए भी इसकी सामग्री बाबासाहेब अंबेडकरजी की विरासत और भीमगीत में पाए गए सामाजिक न्याय और समानता से सम्बंधित होती है। लावणी रूप प्रदर्शन में एक गतिशील और मनोरम तत्व जोड़ता है, दर्शकों को आकर्षित करता है और शक्तिशाली संदेश देता है। नृत्य और संगीत के साथ प्रस्तुति होने के कारण यह गीतप्रकार भीमगीतोंमे आजकल लोकप्रिय होने लगा है।

अनप्लग्ड गीत – अनप्लग्ड गानों का मतलब गानों के ऐसे वर्जन से है जो बिना इलेक्ट्रॉनिक इंस्ट्रूमेंट्स के रिकॉर्ड किए जाते हैं। इनमें आमतौर पर गिटार, पियानो, या अन्य एकोस्टिक इंस्ट्रूमेंट्स का उपयोग होता है, जिससे गाने में सादगी और गहराई आती है। ये गाने अक्सर लाइव प्रदर्शन में सुने जाते हैं और इनका उद्देश्य गाने की मूल भावनाओं को उजागर करना होता है।

शास्त्रीय संगीत के आधार पर बने गीत – आधुनिक युग के भीमगीत कलाकरोंमें शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण लिए हुए कलाकारोंका समावेश अधिक रूप में देखा जा रहा है। इसका परिणाम भीमगीतोंकी रचनाओंमेंभी दिखाई देता है। आज भीमगीतोंकी रचनाकारोंमें विभिन्न विश्वविद्यालयोंके अध्यापकोंका समावेश दिखाई दे रहा है। परिणामस्वरूप आज भीमगीत हमें शास्त्रीय बंदिशोंके रूप में भी सुनाई देते है। इसमें रचनाकारोंकी रचनात्मकता के आधार पर नाटय संगीत, रागसंगीत, उपशास्त्रीय संगीत आदि के आधार पर रचनाऐं प्राप्त होती है।

भीमगीतोंके संरक्षण तथा संवर्धन के प्रयास –

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय (बामू) द्वारा भीमगीतोंके संरक्षण की एक योजना का निर्माण कार्य हाथ में लिया गया है। **गीत भीमयान** शीर्षक से इस परियोजना में दिवंगत कवि वामन कर्डक द्वारा लिखे गए 100 गीत शामिल हैं।

सुश्री देवकी पंडित, रवींद्र साठे, आशा भोसले, कविता कृष्णमूर्ति, अनूप जलोटा, हरिहरन, अलका याग्निक, शंकर महादेवन, सोनू निगम, कैलाश खेर, उस्ताद अहमद और मोहम्मद हुसैन, अश्विनी भिडे–देशपांडे और आरती अंकलिकर सहित भारत के कई प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक और पार्श्व गायकों ने इस परियोजना के लिए अपनी आवाज दी है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के समन्वयक डॉ. संजय मोहड, जिन्होंने परियोजना के सभी गीतों के लिए संगीत दिया है और उनका निर्देशन किया है। गीत भीमयान की खास बात यह है कि देश में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में भारत के प्रसिद्ध गायक और कलाकार इस संगीत परियोजना की संरचना में भाग ले रहे हैं। यह एक विशुद्ध रूप से अकादमिक और शैक्षिक संगीत गतिविधि है, जो आनेवाले समय में युवा पीढी को डॉ. आंबेडकरजी के कार्य से परिचित कराएगी।

निष्कर्ष

पुराने और आधुनिक भीमगीतोंके उद्देश, भाषाशैली, प्रस्तुति का स्वरुप, प्रस्तुति स्थान, उसमे उपयोजित संगीत आदि सभी में ऐसा अंतर है, जिसे नजर अंदाज करना संभव नहीं है। परन्तु ऐसा होते हुए भी यह कहना निश्चित रूप से संभव है, की इन बद्लावोंके कारण भीमगीतोंके क्षेत्र में वृद्धि हुई है। आज भीमगीतोंका विस्तार केवल दलित समाज तक मर्यादित नहीं रहा है बल्कि सभी तरह के मंचों पर और सभी धर्म, जाती के लोगों द्वारा उनका प्रदर्शन हो रहा है। आधुनिक युग में किसी न किसी माध्यम की सहायता से भीमगीतोंने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनायीं है। इन गीतों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अम्बेडकरजी के महान कार्य प्रचार तथा प्रसार हो रहा है।

अंततः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी की आंबेडकरी आंदोलन का प्रमुख हिस्सा रहे भीमगीतोंका विकास बिल्कुल मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में निर्माण हुए विविध संप्रदाय तथा भक्तिसंगीत के विकास के साथ साथ जाता दिखाई देता है।

भक्ति आंदोलन और भीमगीत आंदोलन दोनों समाज में समानता और जागरूकता लाने के प्रमुख माध्यम रहे हैं। भक्ति आंदोलन ने मध्यकालीन भारत में धर्म के आधार पर समाज में फैली असमानता को चुनौती दी और ईश्वर–भक्ति के माध्यम से सामाजिक समरसता का संदेश दिया। इसी प्रकार, भीमगीत आंदोलन ने आधुनिक काल में डॉ. भीमराव अंबेडकर की विचारधारा से प्रेरित होकर दलित और वंचित वर्गों के अधिकारों और स्वाभिमान के लिए अपनी आवाज उठाई। दोनों आंदोलनों ने अपने समय की सामाजिक बुराइयों को उखाड़ फेंकने के लिए कला, विशेष रूप से गीत और

साहित्य, का प्रभावी उपयोग किया। इनकी समानता इस बात में निहित है कि दोनों ने अपनी–अपनी पीढ़ी में सामाजिक जागृति और समानता की भावना को जगाने का कार्य किया।

संदर्भ

1. संत, ज.गो., असा मी जगलो, सुगावा प्रकाशन, पुणे, 2022. आ.4
2. ऐनापुरे, जी. के., गीतांचा भीमसागर। ... चळवळीची गाणी, लोकसत्ता, इ पेपर, अप्रैल १४, २०१४.

3- भगत, असित, Bheemgeets:-Narrating struggle through songs,

3. https://www.caleidoscope.in/art-culture/bhim-geets-narrating-struggle-through-songs

4. Digital Bheem Jayanti 2020 | Bheemgeet Facebook Live | Bheemgeet | Part 2 (youtube.com)

5. Digital Bheem Jayanti 2020 | Bheemgeet Facebook Live | Bheemgeet | Part 1 (youtube.com)

6- About-Marathi - Bheemgeet